20

सामाजिक नियंत्रण

हमें अपने बचपन की बातें याद हैं कि हमारे माता-पिता हमें दाहिने हाथ से भोजन कराने हेतु किस-किस तरह समझाते थे और किस तरह अपने बड़े-बूढ़ों तथा अपने शिक्षकों का आदर करने, जीवन में नियमित रहने एवं जरुरतमन्द लोगो की मदद करने की बाते सिखाते थे। बाद में हमने सीखा कि हमें सड़क पर अपने बांए हाथ की ओर चलना या गाड़ी चलाना चाहिए और अपनी मातृभूमि के नियमों-कानूनों का पालन करना चाहिए। तत्पश्चात हमें अपने बूढ़े माता-पिता, बच्चों तथा अपने कार्य के अनुसार व्यावसायिक उत्तरदायित्वों के विषय में उत्तरदाई बनने की सीख दी गई।

इससे स्पष्ट है कि हमारा व्यवहार हमारे परिवार, प्रचलित प्रथाओं और परंपराओं, समाज और राज्य द्वारा भी संयमित किया जाता है। यह एक स्पष्ट विचार है कि नियंत्रण रहित स्वतंत्रता से अराजकता फैलेगी और सामाजिक व्यवस्था मिट जाएगी। अतएव, एक समाज के लिए यह परमावश्यक समझा जाता है वह व्यवस्था और प्रगति को बनाए रखे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- सामाजिक नियंत्रण का अर्थ और आवश्यकता स्पष्ट कर सकेंगे;
- सामाजिक नियंत्रण के अनौपचारिक साधनों जैसे सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में लोकरीतियों, लोकाचारों (रुढ़ियों) प्रथाओं तथा धर्म की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधनों जैसे, कानून शिक्षा तथा राज्य की भूमिकाओं का वर्णन कर सकेंगे; और
- सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने वाली एजेन्सियों जैसे, परिवार, आस-पड़ौस तथा जनमत का विवेचन कर सकेंगे।

20.1 सामाजिक नियंत्रण का अर्थ

एक समाज को सुचारु रूप से संचालन के लिए यह परमावश्यक है कि इसके सदस्यों का आचरण और व्यवहार इस तरह का हो जो उस समाज के अन्य सदस्यों को पसंद आए। दैनिक जीवन में हमारा व्यवहार पूर्णत: व्यवस्थित और अनुशासित हो। सामान्यत: हम अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों का विरोध नहीं करना चाहते, हम अपने विद्यालयों या अन्य स्थानों में विभिन्न नियमों के पाबंद रहने का प्रयत्न करते हैं और अनुशासन रखते हैं। जो लोग समाज के प्रतिमानों (नार्मस) का पालन नहीं करते उनकी आलोचना अथवा निन्दा होती है।

सामाजिक नियंत्रण समाज स्वीकृत सामाजिक प्रतिमानों के माध्यम से समाज में व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने का एक सामान्य तरीका है। ताकि वे स्वीकृत सामाजिक प्रतिमानों के अनुकूल व्यवहार करें। सामाजिक नियंत्रण की परिभाषा इस तरह की जा सकती है- ''एक बदलते हुए संतुलन के रूप में संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था जिस तरह से परस्पर मिलजुलकर कार्य करती और स्वयं को बनाए रखती है अथवा संचालित रहती है'', उसे सामाजिक नियंत्रण कहा जाता है।

यह सामाजिक नियंत्रण उस प्रणाली का नाम है जो हमारे व्यवहार को नियंत्रित करती है, चाहे वह नियंत्रण प्रचलित आदर्शों और रीतियों के माध्यम से हो अथवा राज्य और उसकी बाध्यकारी शक्तियों के माध्यम से।

समाज में व्यवहारों का नियमन या संयमन चाहे वह कुछ व्यक्तियों का हो अथवा समुदायों का, दो तरीके से किया जाता है-

(अ) समाज के स्थापित प्रतिमानों (नार्मस) तथा सामाजिक-मूल्यों को ध्यान में रखकर और

(ब) शक्ति के प्रयोग द्वारा।

समाजशास्त्रियों द्वारा ''सामाजिक नियंत्रण'' शब्द का प्रयोग पहले प्रकार के नियमन के लिए किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 20.1

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

1. सामाजिक नियंत्रण की परिभाषा लिखिए।

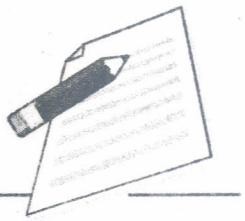

2. वे कौन सी दो तरीके हैं जिनसे व्यक्ति का व्यवहार संयमित हो सकता है?

20.2 सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता और अभिप्राय (उद्देश्य)

आवश्यकता:

सभी सामाजिक विचारकों ने सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता और महत्त्व को स्वीकार किया है। व्यक्ति अपनी रुचियों और क्षमताओं के कारण अपने अलग-अलग विचार रखते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति को अनियंत्रित आजादी से कार्य और व्यवहार करने दिया जाए तो इससे समाज में अराजकता और दुर्व्यवस्था फैल जाएगी। बार-बार और लगातार संघर्ष और झगड़ों से समाज की शक्ति और कार्यकुशलता निरंतर बर्बाद होती रहेगी।

तुलना के लिए हम एक सड़क पर बिना यातायात के संकेतों और नियमों के यातायात का आवागमन मन में लाएँ और सोचें। सड़क पर मची उस हड़कम्प का हमें सहज ही अनुमान हो सकता है जो सड़क पर फैल जाएगी और परिणामस्वरूप चारों और ट्रैफिक जाम लग जाएगा। इससे ज्यादातर ड्राइवरों की बेचैनी और क्रोधपूर्ण वार्तालाप का अनुमान लगाया जा सकता है। यह समझना कितना आसान है कि इस स्थिति का जो परिणाम होगा वह पूरी तरह अवांछित और अप्रिय होगा। यह एक तथ्य है कि यातायात के नियम व्यवस्था तथा वाहनों का सुगम आवागमन बनाए रखने में मदद करते हैं जो केवल एक नियंत्रण बनाए रखने के कारण ही संभव होता है।

यदि समाज में व्यवहार के स्वीकृत तौर तरीके न हों तो उसकी स्थिति भी कुछ इससे अलग नहीं होगी। अत: लोगों को एक ऐसी मेलजोल और सह-अस्तित्वपूर्ण रीति से रखना होगा जिससे उन्हें और साथ ही, समुदाय को भी लाभ पहुँचे। सामाजिक नियंत्रण निम्नांकित कारणें से एक आवश्यकता बना जाता है।

1. पुरानी व्यवस्था को बनाए रखना

एक समाज और समुदाय के लिए सततता और एकरूपता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह पुरानी व्यवस्था को बनाए रखे। यह कार्य परिवार द्वारा संपन्न होता है। परिवार के पूर्वज या बुजुर्ग व्यक्ति बच्चों एवं युवाओं में व्यवहार की मान्य रीतियों, परंपराओं, जीवन-मूल्य पद्धतियों और तौर-तरीकों के संस्कार डालते हैं और उन्हें सामाजिक बनाते हैं।

2. व्यक्तिगत व्यवहार को संयमित (नियमित) करना

लोग कें विचारों, रुचियों, दृष्टिकोणों और आदतों आदि में भिन्नता के कारण उनमें विबिधता पायी जाती है। यहाँ तक कि एक ही माता-पिता के बच्चे अलग-अलग तरीके से सोचते और बर्ताव करते हैं। इसलिए उनके व्यवहारों को स्वीकृत प्रतिमानों के अनुसार नियमित किए जाने की आवश्यकता होती है जिससे समुदाय में एकरूपता और निरन्तरता बनी रहें।

3. सांस्कृतिक कुप्रबन्ध पर रोक लगाना

सामज तीव्र गति से बदल रहा है। ये परिवर्तन मौजूदा सामाजिक प्रणाली को उखाड़ फैंकने हेतु एक चुनौती देते हैं और नई प्रणाली लाकर इसे बदलना चाहते हैं। अच्छे और बुरे के बीच पहचान करने, संतुलन और न्याय की भावना को सुरक्षित रखने के लिए एक प्रभावशाली सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता है।

अभिप्राय (उद्देश्य), समाजशास्त्रियों ने सामाजिक नियंत्रण के बहुत से उद्देश्य बताएं हैं। सामाजिक नियंत्रण का लक्ष्य एक समुदाय में अथवा समाज-विशेष में अनुकूलता लाना होता है।

कभी-कभी, अज्ञानता के कारण, लोग ऐसे कार्य कर जाते हैं कि उससे उन्हें लाभ हो सकता है और नहीं भी हो सकता। पर, निश्चय तौर पर, समाज का हित सामूहिक स्तर के लाभ में निहित होता है। कुछ अन्य ऐसी परिस्थितियां भी हैं जब व्यक्ति अपने कार्यों से समाज पर पड़े कुप्रभावों से पूरी तरह अवगत होता है परन्तु अपना व्यवहार निरंतर वैसा ही बनाए रखता है क्योंकि इससे उसका व्यक्तिगत लाभ होता है। उदाहरण के लिए, एक उद्योग का मालिक अपने उद्योग द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों से पूरी तरह अवगत होता है फिर भी प्रदूषण नियंत्रक-यंत्र उस उद्योग में नहीं लगाता, क्योंकि वह सामूहिक हितों की सुरक्षा की परवाह न करके अधिकाधिक लाभ कमाना चाहता है। समाज इस प्रकार के व्यक्ति के व्यवहारो को नियंत्रित करने का प्रयास करता रहता है। सामाजिक नियंत्रण का अभिप्राय (उद्देश्य) व्यक्ति और समुदाय, दोनों को इस तरह संयमित या विनियमित करना है कि वह दोनों के लिए लाभकारी हो।

पाठगत प्रश्न 20.2

सही और गलत के रूप में उत्तर दीजिए:

(अ) सामाजिक नियंत्रण पुरानी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए परमावश्यक है। (सही/गलत)

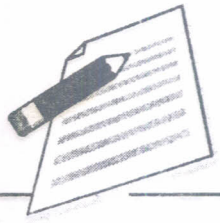

(ब) वर्तमान समय में सामाजिक नियंत्रण की कोई आवश्यकता नहीं है। (सही/गलत)

(स) सामाजिक नियंत्रण का अभिप्राय (उद्देश्य) व्यक्ति और समुदाय के हितों को विनियमित करना है। (सही/गलत)

20.3 सामाजिक नियंत्रण के साधन, औपचारिक और अनौपचारिक

सभी कालों में और सभी समाजों में अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्था और नियंत्रण बनाए रखने के कुछ निर्धारित साधन रहे हैं।

सामाजिक संस्थाओं जैसे-परिवार, निकट संबंधियों के समूहों, जाति, गाँव, शिक्षा, राज्य, धर्म और आर्थिक संस्थाओं आदि के द्वारा व्यक्ति और समुदाय सामाजिक प्रतिमानों के अनुसार कार्य करते हैं। समाजशास्त्रियों ने सामाजिक नियंत्रण की संरचनाओं को निम्नानुसार वर्गीकृत किया है:-

(अ) सामाजिक नियंत्रण के अनौपचारिक साधन; और

(ब) सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन।

सामाजिक नियंत्रण के अनौपचारिक साधन

प्राथमिक समूहों में संबंध एकदम निकट, प्रत्यक्ष और अंतरंग होते हैं। प्राय: सामाजिक नियंत्रण अनौपचारिक साधनों द्वारा ही बनाए रखा जाता है जैसे- प्रथाएँ, लोकरीतियाँ, लोकाचार तथा धर्म द्वारा। ये अनौपचारिक समूहों द्वारा अपनाए गए साधन हैं।

सामाजिक नियंत्रण की अनैपचारिक संरचनाओं में समाजीकरण, शिक्षा, परिवार, विवाह, तथा धर्म इत्यादि से संबंधित स्वीकृतियों (मान्यताओं) के माध्यम से कार्य करता है, चाहे वे सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक। सकारात्मक स्वीकृतियों में मुस्काराना, स्वीकृति में सिर हिला देना, पुरस्कार और पदोन्नति आदि सम्मिलित होती हैं। उदाहरणत: परीक्षा में अच्छी तरह सफलता प्राप्त करने पर माता-पिता द्वारा एक साइकिल अथवा घड़ी द्वारा पुरस्कृत किया जा सकता है।

नकारात्मक स्वीकृतियों (मान्यताओं) में भौंहे चढ़ाना या त्यौरी बदलना, आलोचना करना, शारीरिक दंड और अन्य दंड आते हैं। विद्यालय में अनियमित व्यवहार का परिणाम स्कूल से निकालना अथवा कठोर दंड हो सकता है जो नकारात्मक स्वीकृति का एक उदहारण है।

सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन

सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन शिक्षा राज्य एवं कानून आदि है इन संस्थाओं को वैध शक्तियाँ प्राप्त होती है तथा कानून, शिक्षा, राज्य द्वारा पोषित होती है। औपचारिक संस्थाएं सामाजिक नियंत्रण हेतु बल प्रयोग भी कर सकती है। उदाहरणत: किसी की सम्पत्ति को चुरा लेने वाले किसी अपराधी को जेल की सजा दी जा सकती है। दूसरे शब्दों में, ये संस्थाएँ एक व्यक्ति और समुदाय के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए वैध शक्ति का प्रयोग करती हैं। अब हम सामाजिक नियंत्रण के अनौपचारिक और औपचारिक साधनों के विभिन्न प्रकारों के विषय में चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 20.3

कोष्ठकों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(अ) एक प्राथमिक समूह में संबंध ..... होते हैं। (अंतरंग/औपचारिक)

(ब) सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन ..... द्वारा लागू किए जाते हैं। (कुल, राज्य, परिवार)

(स) अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण ..... के द्वारा बनाए रखा जाता है। (कानून, प्रथाओं)

(द) सकारात्मक स्वीकृतियों में एक ..... शामिल होती है। (भोहें चढ़ाना, मुस्काराहट)

20.4 सामाजिक नियंत्रण के अनौपचारिक साधन

(1) लोकरीतियाँ (2)लोकाचार (रुढ़ियाँ) (3) प्रथाएं (4) धर्म

यह उल्लेखनीय है कि हमारी जीवन शैलियों में विविधता के साथ ही सामाजिक नियंत्रण के साधनो में भी विविधता हैं। सामाजिक नियंत्रण एक समुदाय अथवा समाज, के अनुरूप खास और विशिष्ट तरह का होता है। नियंत्रण की अनौपचारिक संरचनाएं उसी के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। परिवार के अतिरिक्त, अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण दूसरी सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी लागू किया जाता है जैसे आस-पड़ौस, निकट-संबंधी, कुल तथा गाँव आदि द्वारा।

1. **लोक रीतियाँ:** लोक रीतियाँ वे आदर्श प्रतिमान हैं जिनके अनुकूल लोग

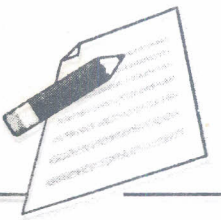

व्यवहार करते हैं। ऐसा करना एक चलन या रिवाज है। लोकरीतियों के अनुकूल चलना या व्यवहार करना किसी कानून अथवा समाज की किसी दूसरी ऐजेन्सी द्वारा लागू नहीं किया जाता । यह प्रत्येक समाज या समुदाय में स्थापित रीतियों की एक अनौपचारिक मान्यता या स्वीकृति है। लोकरीतियाँ या लोकचलन अभिवादन, वेषभूषा, भोजन, दैनिक आदतों, धार्मिक पूजा पाठों आदि के स्वरूपों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए भारत में उत्तरी और दक्षिण राज्यो में भोजन की पद्धतियाँ अलग-अलग हैं और ये पद्धति या आदत तब भी बनी रहती है जब व्यक्ति अपने पुराने स्थान से काफी दूर भिन्न स्थान पर चला जाता है।

2. **लोकाचार (रुढ़ियाँ):** लोकाचार व्यक्ति के नैतिक आचरण से संबंधित होती हैं और लोकरीतियों से बिल्कुल अलग होती हैं। ये समाज की जीवन-मूल्य-प्रणाली को प्रभावित करती हैं और सामाजिक अधिनियमों के रूप में होती हैं जिनका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना होता है। विशिष्ट परिस्थिति में व्यक्तियों के आपसी संबंधों को संयमित करना लोकाचारों का काम है जैसे पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों तथा अन्य छोटे-बड़ों आदि के परस्पर संबंधों को संयमित करना। उनका संबंध सामान्य सामाजिक संबंधों से भी है जैसे ईमानदारी, सच्चाई, कठिन परिश्रम और अनुशासन आदि। चूकि लोकाचार सोच समझ कर समूह हित के लिए निर्धारित की गयी है अत: उन्हें सुरक्षित रखने पर जोर दिया जाता है और उनकी अवहेलना तथा विचलन प्राय: दंडनीय होता है। संभवत: वे अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण की सबसे मजबूत संरचनाएँ हैं।

3. **प्रथाएँ:** प्रथाएं लम्बे समय से स्थापित वे लोक-रीतियाँ हैं जो स्वत: किंतु धीरे-धीरे बनती हैं। सामाजिक जीवन को नियमित करने के साथ ही वे उसे एक साथ बांधती हैं। आदिकालीन समाज में प्रथाएँ सामाजिक नियंत्रण की शक्तिशाली माध्यम होती थीं परंतु वे आधुनिक काल में, वैयक्तिकता और अनेकता की ताकतों की प्रबलता के कारण कमजोर पड़ती जा रही हैं।

4. **धर्म:** धर्म अपने मानने वालों के लिए शक्तिशाली दबाव का कार्य करता है। ऐमील दुरर्खीम धर्म को पवित्र वस्तुओं अथवा कार्यों से संबंधित विश्वास तथा रीति-रिवाजों की एकीकृत प्रणाली के रूप में परिभाषित करते हैं। धर्म के माध्यम से समान विश्वास और रीति-रिवाजों वाले लोग एक नैतिक समुदाय के रूप में इकट्ठे हो जाते या जुड़ जाते हैं। एक व्यक्ति के जीवन में धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है और वह व्यक्ति की आध्यामिकता, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया में धर्म निम्न प्रकार से सहायता करता है-

(अ) प्रत्येक धर्म में 'पाप' और 'पुण्य' की धारणा होती है। बचपन से ही प्रत्येक

व्यक्ति को इन धारणाओं से तथा अच्छे और बुरे के विचारों को समझाकर इन्हें परिपुष्ट किया जाता है। ये व्यक्ति के व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भर दी जाती है। और जीवन पर्यन्त कोई भी निर्णय लेने में उसका मार्गदर्शन करती है।

(ब) धार्मिक परिपाटियों तथा रीतियों के द्वारा विवाह, परिवार के सदस्यों में परस्पर संबंध, संपत्ति के संबंध, उत्तराधिकार और संपत्ति-अर्जन के नियम आदि निर्धारित होते हैं।

(स) धार्मिक नेता लोगों का एक निर्धारित आचरण संहिता का पालन करने हेतु समझाकर उनके व्यवहार को संयमित या विनियमित करते हैं।

(द) सामुदायकि क्रिया-कलापों, प्रार्थना-सभाओं तथा धार्मिक कृत्यों और त्यौहारों, उत्सवों के संयोजन करके, धार्मिक संस्थाएँ भी धर्मावलंबियों को समीप लाकर तथा सामान्य विश्वास की प्रणाली को मजबूत बनाते हुए और इससे लोगों के व्यवहारों का मार्जन और नियमन करके, इस प्रक्रिया में अपना योगदान देती हैं।

पाठगत प्रश्न 20.4

एक ही वाक्य में उत्तर दीजिए:

1. लोकरीतियां या जन रीतियाँ क्या होते हैं?
2. लोकाचार क्या होती हैं?
3. प्रथाओं की विवेचना कीजिए।
4. धर्म का वर्णन कीजिए।

20.5 सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन

(1) कानून (2) शिक्षा (3) राज्य

(1) **विधि या कानून:** आदिकालीन समाजों में, समुदायों के अनुरूप व्यवसाय होते थे, और लोगों में आपस में प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत तथा अंतरंग संबंध हुआ करते थे। ये लोकरीतियां, लोकाचार तथा प्रथाएं व्यक्ति के व्यवहार के नियंत्रण के लिए पर्याप्त थे। सामाजिक नियंत्रण की अनौपचारिक संरचना का पालन न करने का प्राय:, प्रश्न ही नहीं उठता था। आधुनिक समाज श्रम-विभाजन, तथा कार्य-क्षेत्र में विभिन्नता, नैतिकता और जीवन-पद्धति की विशेषताओं से युक्त है। शहरीकरण तथा लोगों के अधिकाधिक कमाने की कोशिशें के फलस्वरूप मानव-समुदायों का चरित्र बदल गया है। परस्प संबंध औपचारिक रह गए हैं। विविधतापूर्ण समुदायों को नियंत्रित करने में प्रथाएं तथा लोकरीतियाँ अपर्याप्त प्रतीत हो रहे हैं।

इसी के साथ-साथ राज्य और अधिक मजबूत (शक्तिशाली) और प्रकृति से अधिक विशिष्ट हो गया है। अब एक व्यक्ति के व्यवहार को एक समान कानूनों को लागू करके नियमित किया जाना आवश्यक और संभव हो गया है। ये कानून राज्य की न्याय प्रणाली, प्रशासनिक, और राजनैतिक मशीनरी के द्वारा समर्थन-प्राप्त हैं। प्रथाओं और लोकाचारों के स्थान पर कानून और उसको लागू करने वाली एजेंन्सियाँ व्यवहार की नियामक बन गई हैं और वे ही सामाजिक व्यवस्था तथा नियंत्रण को सुनिश्चित करती हैं।

कानून की परिभाषा दो प्रकार से की गई है। कुछ विचारकों ने इसे ''आदर्श व्यवहार प्रतिमान'' के रूप में परिभाषित किया है। जबकि दूसरों ने इन्हें राज्य द्वारा घोषित उन नियमों के रूप में माना है जिनकी अनुपालना बाध्यकारी होता है।

लोग कानून का पालन निम्नांकित दो प्रमुख कारणों से करते हैं:

(1) **दंड का भय**- राज्य द्वारा दंड का भय लोगों की आवश्यक स्वतंत्रताओं में कटौती करता है। यही कारण है कि यह गैरकानूनी कार्य को करने से रोकता है।

(2) **नियमानुकूलता की आदत**- बहुत लोगों का विश्वास है कि कानूनों का पालन इनकी कुशलता, संपन्नता और सामाजिक स्थिरता तथा प्रगति के लिए भी, आवश्यक है। इसे ''नियमानुकूलता की आदत'' कहते हैं। परिवार, शिक्षण संस्थाएँ तथा धार्मिक उपदेशक, ये सभी इस व्यवहार को लोगों के मन में बिठाने तथा जीवित रखने की भूमिका निभाते हैं।

कानूनों की उत्पत्ति, प्रथाओं, परंपराओं, धर्म और न्यायलय के निर्णयों से हुई है। वैसे कानूनों के नैतिक पहलू भी होते हैं। कानूनों का नैतिक पहलू और संस्थागत व्यवस्थाओं से समर्थित होने के कारण कानूनों को मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में अधिक योग्य हैं। वे कानून सक्ष्म बनाती है जिसे रीति-रिवाजों और वैधानिक दोनों का समर्थन प्राप्त होता है, और तत्परता से स्वीकार की जाती हैं।

वर्तमान में, कानून वैधानिक संस्थाओं द्वारा घोषित होता हैं और सरकारों के माध्यम से राज्यों द्वारा लागू किया जाता हैं। इसमें सरकार में कार्यरत सभी आधिकारिक ऐजेन्सियाँ और कार्यकर्त्ता सम्मिलित होते हैं जिनके माध्यम से राज्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। इस तरह कानून एकरूपता और अनुकूलता सुनिश्चित करके सामाजिक व्यवहार को नियत्रित और नियमित करता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि कानून, प्रथाओं से निम्नलिखित प्रकार से अलग एवं भिन्न होता हैं-

(1) कानून में बल प्रयोग करना अन्तर्निहित होता है। अत: यह लोगों को एक खास तरीके से काम करने के लिए विवश करती है। दूसरी ओर प्रथाओं का आदर होता है और वे प्रचलित रहती हैं क्योंकि उनके साथ परंपराओं की भावात्मकता और सामाजिक स्वीकृति जुड़ी होती है।

(2) प्रथाएँ केवल संबंधित समुदायों और कुलों में ही खास महत्व रखती हैं जबकि कानून अधिक सामान्य और प्रकृति से सार्वभौमिक होती हैं।

(3) कानून तोड़ने पर राज्य द्वारा दंड का प्रावधान होता है जबकि प्रथाओं की अवहेलना पर समाज द्वारा नाराजगी प्रकट की जाती है और एक सीमा से बाहर चले जाने पर में समाज से बहिष्कृत भी किया जाता है।

(4) कानून राज्य और इसकी संस्थाओं के उद्‌भव के साथ जुड़ी होने से कुछ समय पूर्व ही निर्मित हुई हैं जबकि प्रथाएँ किसी न किसी रूप में सभी कालों और सभी समाजों में सदा अस्तित्व में रही हैं।

आधुनिक राष्ट्र एवं राज्य के अस्तित्व में आने के कारण राजनैतिक, व्यापारिक और सेना जैसे क्षेत्रों में संबंधों को नियमित करने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कानून आवश्यक हो गए है। जिस तरह से राष्ट्रीय कानून देश की अपनी सीमाओं के अंदर व्यवस्था और नियंत्रण बनाए रखने के लिए होती हैं उसी तरह से अंतरराष्ट्रीय कानून विभिन्न राष्ट्रों के व्यवस्थित व्यवहार को बनाए रखने का कार्य करती हैं।

2. **शिक्षा:** कानून के साथ, शिक्षा भी सामाजिक नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा व्यक्ति को अनुशासन, सहकारिता, सहनशीलता तथा एकता और परस्पर मेलजोल का महत्व और मूल्य सिखलाती है। सभी स्तरों की शिक्षण-संस्थाएँ (स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय) अपने औपचारिक संरचित पाठ्यक्रमों के साथ ही व्यवहारिक शिक्षण द्वारा ज्ञान और नैतिकता भी प्रदान करती है।

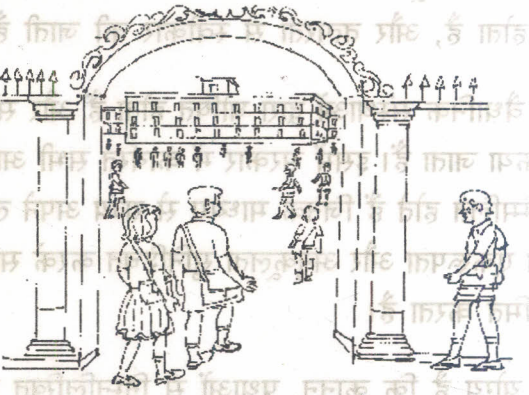

शिक्षा के एक माध्यम के रूप में विद्यालय

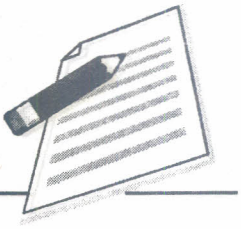

विभिन्न समाजों में शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्वरूप बदलती हुई सामाजिक लोकाचारों विकास के स्तर और सामाजिक आवश्यकताओं पर आधारित होते हैं। इस तरह प्राचीन भारतीय समाजों में धार्मिक ग्रंथों, दर्शनशास्त्र और आध्यात्म के अध्ययन पर बल दिया जाता था। सामाजिक विकास की ओर ध्यान परिवर्तित होने का परिणाम यह हुआ है कि अब अन्य क्षेत्रों और प्रबंधन-पटुताओं के ज्ञान की मांग बढ़ गई है।

स्कूलों में प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समानता और राष्ट्रीय लक्ष्यों के विचार विद्यार्थियों को अपने इतिहास, संस्कृति, विरासत, आदर्शों तथा नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक शिष्टाचार की बातों को बालकों के मन में बिठाते हुए शिक्षा प्रणाली औपचारिक सामाजिक नियंत्रण की एक माध्यम या एजेन्ट की भूमिका निभाती है।

3. **राज्यः** सामाजिक नियंत्रण को शासित करने में राज्य का एक बड़ा योगदान होता है। समाजशास्त्रियों ने राज्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''राज्य प्राथमिक रूप में व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने हेतु निर्मित वह संगठन है जो अपनी सीमाओं में सार्वभौम अधिकार का प्रयोग करते हुए, शक्तिशाली कानून के द्वारा समर्थित होता हुआ एक संप्रभुतापूर्णसत्ता संपन्न शक्ति के रूप में माना जाता है।''

राज्य सरकार के द्वारा कार्य करता है। वर्तमान राष्ट्र-राज्य कल्याणकारी राज्यों के रूप में कार्यरत रहते हैं। इसका आशय यह है कि वे अपने नागरिकों को एक बड़े पैमाने पर सामाजिक सुविधाएं जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य-सुविधाएँ, वृद्धावस्था पेंशन और बेरोजगारी भत्ता आदि प्रदान करते हैं। ये लक्ष्य जन-सहयोग और जन-संचार माध्यमों, अशासकीय समाजसेवी संगठनों तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के साधनों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। उदाहरण के लिए - सरकार का पल्स पोलियो प्रोग्राम दूरदर्शन के प्रयोग और प्रसारणों, पोस्टरों, गैर सरकारी संगठनों तथा शिक्षण-संस्थाओं द्वारा व्यापक रूप से समर्थित व प्रचारित रहा है। ये संस्थाएँ सरकार के उपायों के लाभों के बारे में आम जनता को शिक्षित करने का प्रयास करती रही हैं। इस उपर्युक्त संदर्भ में, सरकार अपने बल प्रयोग को त्यागकर सामाजिक नियंत्रण की एक अनौपचारिक ऐजेन्सी के रूप में कार्य करती है।

कुछ भी हो, कुछ कार्यों जैसे कानून और व्यवस्था को बनाए रखने, रक्षा, विदेशी मामलों, और वित्त के क्षेत्रों में औपचारिक और कभी-कभी बल प्रयोग वाले तरीके से भी राज्य को कार्य करने की आवश्यकता होती है।

भारत एक संघ राज्य है और इसकी सरकार अपने आप में विभिन्न स्तरों पर कार्य करती है- जैसे गाँव, ब्लाक, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तरों पर। इन सभी स्तरों पर

इसके कार्यकारी लोग नियमों और कानूनों को लागू कर सकते हैं। आधुनिक समाजों में राज्य सामाजिक नियंत्रण के माध्यम (एजेन्ट) के रूप में उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण होता चला जा रहा है।

पाठगत प्रश्न 20.5

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

1. आप कानूनों का पालन क्यों करते हैं?
2. कानून के दो स्रोतों के नाम बताइए।
3. पारिभाषिक शब्द "सरकार" से आप क्या समझते हैं?
4. कानूनों और प्रथाओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

20.6 सामाजिक नियंत्रण की एजेंसियाँ–परिवार, आस–पड़ोस और जनमत

1. परिवार

बच्चा अपने वंश और वातावरण की उपज होता है। वह कुछ निश्चित रूप से संक्रमित क्षमताओं के साथ पैदा होता है। जो या तो बढ़ जाती हैं अथवा वातावरण की उत्तेजकता के कारण दब या कुंठित हो जाती हैं। इस स्थिति में उसकी स्थिति एक फूल के समान होती है। उचित सिंचन और देखभाल से यह खिल उठेगां यदि वह स्थिति नही मिले तो यह क्षीण हो जाएगा। परिवार सामाजिक नियंत्रण की अत्यंत महत्त्वपूर्ण एजेंसी है। प्रत्येक बच्चा अपने सबसे अधिक निकट के वातावरण से सीखता है, जो सर्वप्रथम उसे परिवार द्वारा ही मिलता है। शिष्टाचार, आदतें तथा दृष्टिकोण सर्वप्रथम अति समीपस्थ भूमिका-आदर्शों जैसे माता-पिता, भाई-बहिन, परिवार के अन्य बच्चे-बूढ़े आदि से, सबसे पहले सीखे और प्राप्त किए जाते हैं। परिवार बालक को समुदाय के आदर्शों, जीवन मूल्यों, परंपराओं में समाजीकृत करता अथवा अभ्यस्त बनाता है।

गाँवों में, व्यक्ति अपने परिवार से अपना स्तर प्राप्त करता है। व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के निर्माण में बड़ों की जो प्रमुख भूमिका होती है वही व्यक्ति के दृष्टिकोणों, रुचियों और जीवन-शैलियों आदि में स्पष्ट रूप से प्रकट होती है या दिखाई देती है। बच्चों के विवाह अधिकांशत:, बुजुर्गों द्वारा तय किए जाते हैं और वे दो व्यक्तियों के संबंध नहीं

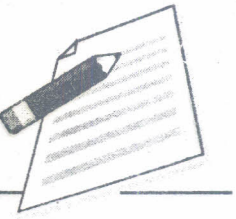

होकर दो परिवारों के बीच के संबंध माने जाते हैं।

शहरों में, परिवार एक व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका, निभाता है। औद्योगीकरण, सीमित आय, और स्थान की कमी ने एकल परिवारों के प्रसार को जन्म दिया है। गाँवों में घटित होने वाली बातों से ये एकदम भिन्न हैं। इसलिए यहाँ परिवार अपने आप पर ही विशेष ध्यान देते हैं। गाँवों में सामान्य रूप से प्रचलित सामूहिकता के विपरीत शहरों में वैयक्तिकता को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्ति बढ़ रही है। शहरो में समाजीकरण का कार्य जिसे सामान्यतया एक परिवार द्वारा किया जाना चाहिए, वह माध्यमिक संस्थाओं द्वारा जैसे स्कूल, खेल के संगी-साथियों और जन-संचार-माध्यमों द्वारा परिपूरित किया जाता है। ग्रामीण वातावरण के विपरीत शहर के व्यक्ति अपने सामाजिक स्तर के एक भाग को परिवार से प्राप्त करते हैं किंतु उसका अधिक महत्त्वपूर्ण भाग वह अपनी स्वयं की उपलब्धियों से अर्जित करता है। माता-पिता तथा बड़े बुजुर्ग अभी भी शहरों में ज्यादातर शादियाँ तय कर रहे हैं। तथापि लड़के और लड़की की सहमति ले ली जाती है। जाति एवं धर्म से बाहर की शादियों की संख्या भी बढ़ती चली जा रही है। इस भाँति हम देखते हैं कि बढ़ती हुई व्यक्तिगत पसंद, महत्त्वपूर्ण हो रही है। फिर भी, दोनों ओर से परिवार के पक्के समर्थन के अभाव में व्यक्तिगत अनबन के कारण परिवारों के टूटने और तलाक हो जाने के ज्यादा मामले हो रहे हैं जिसके विपरीत गाँवों में आपसी संबंधियों की मदद से ऐसे परस्पर अनबन वाले मामलों को तत्परता से निपटाने की एक सामाजिक व्यवस्था रहती है।

2. आस–पड़ौस

गाँवों में आस-पड़ौस, साधारणत:, एक ही वंश, समुदाय या जाति के लोगों का होता है। अत: निकटतम आस-पड़ौस का नियंत्रण बड़े जटिल होते हैं, जैसा कि इस बात से स्पष्ट है कि एक घर का दामाद उस पूरे समूह (समुदाय) का दामाद माना जाता है और कभी-कभी तो पूरा गाँव ही उसे दामाद मानता है।

इसके विपरीत, शहरी वातावरण में पड़ोसियों में परस्पर संबंध औपचारिक होते हैं। वे समय-समय पर परस्पर बातों से बनने-बिगड़ने वाले होते हैं और यही कारण है कि वे ग्रमीण वातावरण में पाए जाने वाले संबंधों से बहुत ज्यादा कमजोर और नाजुक होते हैं। बड़े शहरों में आस-पड़ोस के संबंध, प्राय: पीछे धकेल दिए जाते हैं अर्थात वे महत्त्वपूर्ण नहीं होते। पड़ोसियों में मुश्किल से ही कभी कोई वार्तालाप होता है।

इस प्रकार ग्रामीण आस-पड़ौस के लोग अनेक दैनिक क्रिया-कलाप में परस्पर उत्साहपूर्वक सहभागी होते हैं। इससे यहाँ पड़ौस सामाजिक नियंत्रण के एक माध्यम के रूप में अपनी भूमिका सशक्त रूप से निभाता है। इससे परस्पर एकरूपता और अनुकूलता सुनिश्चित होती है और इससे विचलित तथा भटके हुए लोग सुधरते हैं।

उदाहरण के लिए किसी गाँव में बूढ़े माता-पिता की देखभाल न करने वाले बेटे को पड़ोसी लोग लताड़ लगाकर उसकी तीव्र भर्त्सना करेंगे और यहाँ तक कि बहिष्कार भी कर देंगे।

नगरों में व्यक्तिगत व्यवहारों में इतनी नजदीकी नहीं होती। अत: इतनी आत्मीय रोक टोक भी नहीं होती। वहाँ समुदाय को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत क्रिया-कलापों पर पड़ोसियों द्वारा मात्र नजर रखी जाती है जैस-जैसे एक व्यक्ति जो खुली जगह पर कूड़ा फेंकता है, उसकी आस-पड़ौस के वातावरण को प्रदूषित करने के लिए पड़ोसियों द्वारा आलोचना की जाती है।

3. जनमत

सामान्य रूप से समुदाय के हितों को प्रभावित करने वाले मामलों के बारे में जो लोगों में आम राय बनती है उसे जनमत कहते हैं

दूरस्थ गाँवों में समुदाय, जहाँ दूरदर्शन और अखबार नहीं होता है वहाँ लोग अपने आस-पास की खबरों और घटनाओं के लिए परस्पर चर्चा पर ही भरोसा करते हैं और उन विषयों पर अपने विचार प्रकट करते हैं। फिर भी, दूर-दराज के स्थानों में रेडियो घटित घटनाओं के समाचारों के महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में उत्तरोत्तर एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गया है। यहाँ समूह में बैठकर समाचार-पत्र (अखबार) भी पढ़े जाते हैं। इन दिनों दूरदर्शन गाँवों में पहुँच रहा है। स्वतंत्र भारत में, प्रौढ़ निर्वाचन के प्रवेश के साथ पंचायती राज संस्थाओं और नियोजित विकास प्रक्रियाओं ने गाँवों को भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा में लाने में अपना विशिष्ट योगदान दिया है।

नगरों में प्रकाशित सामग्री (प्रिंट मीडिया) और दूरदर्शन जनमत बनाने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, क्योंकि श्रव्य और दृश्य माध्यम अधिक सशक्त होता है। अत: दूरदर्शन ने धीरे से अखबारों पर बढ़त बना ली है। फिर भी अखबार शिक्षित लोगो के जनमत को निरंतर प्रभावित कर रहा है।

पाठगत प्रश्न 20.6

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

(अ) परिवार एक बच्चे के विकास में एक ..... भूमिका अदा करता है।

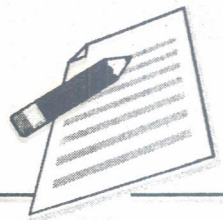

(ब) शहरों में परिवार के समाजीकरण कार्य की क्षतिपूर्ति ..... संस्थाओं द्वारा होती है।

(स) नगरीय केन्द्रों में, एक व्यक्ति प्रमुख रूप से अपना स्तर अपने ..... प्राप्त करता है।

2. एक ही वाक्य में उत्तर दीजिए:

(अ) जनमत क्या होता है?

(ब) जनमत की प्रमुख ऐजेन्सियाँ कौन-कौन सी हैं?

आपने क्या सीखा

- सामाजिक नियंत्रण समाज द्वारा व्यक्ति के व्यवहार का संयमन या नियमन है ताकि लोग समाज के प्रतिमानों को ध्यान देकर पालन करें।
- लोकरीतियाँ, लोकाचार, प्रथाएँ तथा धर्म ऐसे अनौपचारिक साधन हैं जिनके द्वारा समाज सामाजिक नियंत्रण बनाए रखता है जबकि कानून तथा शिक्षा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए औपचारिक संरचनाएँ हैं।
- वर्तमान समाजों में राज्य सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। यह कार्य राज्य नैतिक रूप से प्रेरित करके तथा बल प्रयोग करके दोनों प्रकारों से करता है। राज्य, सरकार एजेन्सियों तथा कार्यकारी लोगों द्वारा विभिन्न स्तरों, जैसे गाँव, जिला, राज्य आदि स्तरों पर कार्य करता है।
- परिवार आस-पड़ौस तथा जनमत भी सामाजिक नियंत्रण को प्रभावित करते हैं।
- जहाँ प्रथाएँ और पारिवारिक परंपराएँ एक ग्रामीण वातावरण में सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने के लिए पर्याप्त होती हैं वहीं शहरीकरण और उसके परिणाम स्वरूप शहर के सामाजिक चरित्र की विभिन्नता के कारण राज्यतंत्र द्वारा लागू की गई कानूनों सामाजिक नियंत्रण पर आधारित होती है।

पाठांत प्रश्न

1. सामाजिक नियंत्रण क्या होता है? हमें इसकी क्या आवश्यकता है?
2. सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक और अनौपचारिक साधनों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. लोकरीतियाँ तथा लोकाचार सामाजिक नियंत्रण में किस प्रकार सहायक होती हैं?
4. सामाजिक नियंत्रण में धर्म की भूमिका की समीक्षा कीजिए।
5. कानून और प्रथाओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में राज्य की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
7. सामाजिक नियंत्रण में शिक्षा किस तरह सहायता करती है?
8. सामाजिक नियंत्रण में परिवार और आस-पड़ौस की क्या भूमिका होती है?
9. सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में जनमत की भूमिका की समीक्षा कीजिए।

शब्द कोष

1. श्रम का विभाजन: यह सामाजिक प्रणाली के अंदर कार्यों की सीमा का निर्धारण होता है। इसका आर्थिक उत्पादन के अध्ययन में प्रयोग होता है।
2. समूह या समुदाय: समुदाय/समूह एक सामाजिक प्रणाली होती है जिसमें एक समाज के सदस्यों तथा समूहों के बीच नियमित आदान-प्रदान होता है।
3. आत्म/आध्यात्म-विद्या: समाजों के अविर्भाव की वह स्टेज जहाँ सामाजिक आयामों की आधी अतिप्राकृतिक स्वरूपों में तथा आधी विज्ञान के स्वरूप में विवेचना होती हो।
4. पूर्व-साक्षर समाज: वह समाज जहाँ पढ़ने-लिखने की परंपरा ही न रही हो। यह शब्द, प्राय:, आदिमकालीन समाज के लिए प्रयुक्त होता है।
5. शहरीकरण: वह सामाजिक प्रक्रिया जिसके तहत अधिकांश जनसंख्या शहरों में जाकर बड़े-बड़े समूहों में केन्द्रित होकर बसती चली जाती है और जो आवश्यक रूप से कृषि-रहित रोजगार वाले होते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. सामाजिक नियंत्रण: वह पद्धति या तरीका जिसके द्वारा समाज लोगों के व्यवहारों को नियंत्रित करता है चाहे वह सामाजिक प्रतिमानों तथा रीतिरिवाजों द्वारा हो अथवा राज्य और इसके बल-प्रयोग के द्वारा।

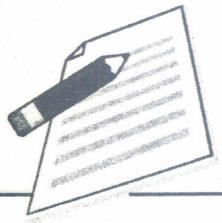

Notes

2. (अ) स्थापित सामाजिक प्रतिमानो और जीवन-मूल्यों पर ध्यान देने के द्वारा

(ब) बल-प्रयोग द्वारा।

20.2

(अ) सही (ब) गलत (स) सही

20.3

(अ) अंतरंग (ब) राज्य (स) प्रथाएँ (द) मुस्कान

20.4

1. लोकरीतियाँ वे आदर्श प्रतिमान हैं जो समाज के दैनिक चलन के अनुकूल होती हैं।

2. लोकाचार नैतिक आचरण से संबंधित होती हैं क्योंकि वे लोक चलन की प्रचलित रीतियों से भिन्न होती हैं।

3. प्रथाएँ लोगों द्वारा लंबे समय से स्थापित रीति-रिवाजें हैं।

4. धर्म पवित्र बातों से संबंधित विश्वासों और रीतियों की एकीकृत प्रणाली होता है।

20.5

1. (अ) भय का डर(ब) नियम पालन की आदत

2. (अ) प्रथाएँ (ब) धर्म (स) विधि या कानून

3. सरकार सभी एजेन्सियों और कार्यकारी लोगों द्वारा बनती है जिनके द्वारा राज्य कार्य करता है।

4. (अ) प्रथाएँ समुदायों और वंशों (कुलों) में खास महत्त्व रखती हैं जबकि कानूनों का स्वरूप अधिक सामान्य होता है।

(ब) प्रथाओं का आदर इसलिए होता है कि वे परंपरा द्वारा मान्य और स्वीकृत होती हैं और उन्हें समुदाय की सामाजिक स्वीकृति मिली होती है जबकि कानूनों का पालन इसलिए होता है क्योंकि वे प्रकृति से बल-प्रयोग पर आधारित होती हैं।

20.6

1. (अ) अति महत्त्वपूर्ण (ब) माध्यमिक (स) उपलब्धियों।

2. जनमत उन दृष्टिकोणों का सम्मिलित रूप होता है जो समुदाय के हितों को प्रभावित करने वाले मामलों के विषय में लोग, प्रायः, बना लेते हैं।

3. जनमत की ऐजेन्सियों में समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, चल-चित्र, कानूनी-पत्र, पैम्पलेट तथा मुँह से निकले हुए शब्द भी सम्मिलित होते हैं।